Result Mitra Daily Magazine

लोथल–सिंधु घाटी स्थल

➢ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में हड़प्पा स्थल–लोथल के पास एक IITian छात्र की मृत्यु हो गई।
- दरअसल यह छात्र सिंधु–घाटी सभ्यता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन करने वाली एक टीम का हिस्सा थे, जिनकी मृत्यु मिट्टी के नमूने एकत्र करते समय खाई के ढहने से हो गई।

➢ लोथल :

- यह सिंधु घाटी सभ्यता के दक्षिणी स्थलों में से एक था, जो वर्तमान में गुजरात राज्य के भाल क्षेत्र में स्थित है।
- यह सौराष्ट्र क्षेत्र में साबरमती एवं भोगवा नदियों के बीच स्थित है।
- स्रोतों के अनुसार, इस बंदरगाह शहर का निर्माण 2200 ईसा पूर्व (आज से 4200 वर्ष पूर्व) हुआ था।
- यह एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था, जहां से मोतियों, रत्नों एवं आभूषणों का व्यापार पश्चिम एशिया एवं अफ्रीका तक होता था।

Note :– 'लोथल' वास्तव में 'लोथ' एवं 'थल' के संयोजन से बना है, जिसका गुजराती में अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है।

- सिंधु सभ्यता के एक अन्य स्थल 'मोहनजोदाड़ो' का शाब्दिक अर्थ (सिंधी भाषा में) "मृतकों का टीला" ही होता है।
- इस शहर की खोज सर्वप्रथम पुरातत्वविद एस. आर. राव द्वारा वर्ष 1956 में की गई थी, जिनके नाम 30 से ज्यादा हड़प्पाई शहरों को खोजने का रिकॉर्ड है।
- राव ने ही लोथल में 'डॉकयार्ड' की खोज की थी।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के अनुसार, दुनिया की सबसे पुरानी डॉक इसी शहर में था, जो इसे साबरमती नदी के प्राचीन मार्ग से जोड़ता था।

➢ राष्ट्रीय समुद्री विरासत :

- लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर का निर्माण–कार्य चल रहा है, जिसमें वियतनाम एक सहयोगी राष्ट्र है।
- यह परियोजना लोथल को न केवल एक श्रेष्ठ पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करेगा, बल्कि आगंतुकों को लोथल सहित सिंधु–घाटी सभ्यता के बारे में जानकारी देगा।
- परिसर में लाइटहाउस संग्रहालय एवं इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान करने वाला–5D थिएटर कई मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक ब्लॉक होंगे।

➢ विवादास्पद तथ्य :

- कई साक्ष्य बताते हैं कि लोथल समुद्री व्यापार के एक केंद्र के रूप में कार्य करता था, जिसको प्रमाणित करने के लिए प्राप्त मुहरों का साक्ष्य दिया गया, जिनका उपयोग संभवत: दस्तावेजों को सील करने या पैकेजों के सीलिंग में किया जाता था।
- 1968 में एक नए शोध के अनुसार (विवादास्पद) लोथल का 'बंदरगाह' वास्तव में पीने के लिए पानी एवं फसलों के लिए सिंचाई के लिए एक जलाशय मात्र था।
- डॉक की अपर्याप्त गहराई को इस शोध ने आधार मानते हुए डॉकयार्ड होने का खंडन किया।
- IIT–गांधीनगर द्वारा किए गए शोध ने उपरोक्त तथ्य को गलत साबित करते हुए डॉकयार्ड के अस्तित्व के प्रमाणित साक्ष्य उपलब्ध करवाए।
- इस शोध के अनुसार, हड़प्पा सभ्यता के दौरान साबरमती नदी लोथल के पास से गुजरती थी, जबकि वर्तमान में यह नदी शहर (डॉकयार्ड स्थल) से 20 km दूर बहती है।

➢ प्रमाणिकता :

- लोथल अपने इंजीनियरिंग चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें डॉकयार्ड भी शामिल है।
- डॉकयार्ड का आमाप 214x36 मीटर था तथा इसमें एक अभिनव जल–लॉकिंग तंत्र भी था।

- यहां से नीलम से बने मोतियों के हार, तांबे/कांसे की कुलहड़ियां एवं मछली के हुक जैसी विशिष्ट कलाकृतियां प्राप्त हुई है, जो मिस्त्र, मेसोपोटामिया एवं फारस जैसी प्राचीन समकक्ष सभ्यताओं के साथ व्यापार की ओर इशारा करती है।

➢ पतन :

- पुरातात्विक स्रोत बताते हैं कि लोथल की बस्तियों का कई बार पुनर्निर्माण किया गया था।
- राव द्वारा साइट के स्ट्रटीग्राफिक रिकॉर्ड में पांच अलग-अलग चरण की पहचान की गई, जो 2400–1900 ईसा पूर्व के हैं।
- यह शहर इतना विशाल था कि यहां 15,000 लोग निवास कर सकते थे।
- राव की पुस्तक "लोथल : ए हड़प्पा पोर्ट टाउन" में उन्होंने उल्लेख किया है कि शहर का पतन एवं अंततः विनाश प्रलयकारी बाढ़ एवं साबरमती के मार्ग परिवर्तन से हुआ।
- पुस्तक के अनुसार, शहर लगभग 2000 ईसा पूर्व बाढ़ की वजह से डूब गया एवं एक्रोपोलिस समतल में बदल गया तथा मलबे एवं गाद ने इमारतों को नष्ट कर दिया।
- बाढ़ के बावजूद लोग शहर में निवास करते रहे, लेकिन यह कालांतर में आवश्यक सुविधाओं से रहित एक खराब नियोजित गांव बन गया।

➢ खोज की कहानी :

- 20 सितंबर 2024 को सिंधु सभ्यता के आधिकारिक खोज के 100 वर्ष पूरे हो गए।
- इस खोज की घोषणा 20 सितंबर 1924 को सर जॉन मार्शल (अंग्रेज पुरातत्वविद एवं ASI के तत्कालीन महानिदेशक) ने की थी।
- इनकी घोषणा 'द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़' में प्रकाशित हुई थी।
- दिलचस्प यह है कि इस घोषणा से पहले ही हड़प्पा के अलावा कई अन्य सिंधु सभ्यता स्थलों की खोज की जा चुकी थी।
- 1921–22 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा, जबकि 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदाड़ो की खुदाई का नेतृत्व किया।
- इससे पूर्व कनिंघम ने सिंधु सभ्यता स्थलों की खुदाई से मुहारें प्राप्त की थी, जिसका मिलान साहनी एवं बनर्जी द्वारा खोजे गए मुहरों से होने पर मार्शल द्वारा यह प्रमाणित किया गया कि ये सभी खुदाई हड़प्पा/सिंधु सभ्यता से ही संबंधित है।

➢ संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य :

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सिंधु सभ्यता के खोजे गए स्थलों की सर्वाधिक संख्या गुजरात से संबंधित है।
- लोथल के अलावा “सूटकोतदा” भी बंदरगाह शहर था।
- लोथल से मनके (Beads) बनाने के कारखाने प्राप्त हुए हैं (अन्य चन्हूदड़ों)।
- लोथल (अन्य रंगपुर) से चावल के साक्ष्य मिले हैं, जो धान की खेती किए जाने को प्रमाणित करते हैं।

Note :– चावल के प्रथम साक्ष्य (हड़प्पा सभ्यता) लोथल से ही प्राप्त हुए हैं।

- हड़प्पा स्थलों में सबसे बड़ा स्थल मोहनजोदाड़ो (पाकिस्तान) में है जबकि भारत में सबसे बड़ा क्षेत्र राखीगढ़ी (हरियाणा)में है।
- सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान तक था, जो त्रिभुजाकार में था।
- इसका पूर्वतम स्थल आलमगीरपुर (UP) हिंडन नदी के पास, पश्चिमतम स्थल सुतकांगेडोर (बलूचिस्तान) दाश्क नदी के पास, दक्षिणतम स्थल दाइमाबाद (महाराष्ट्र) गोदावरी नदी के पास एवं उत्तरतम स्थल मांडा (जम्मू–कश्मीर) चिनाब नदी के पास था।

➢ अन्य प्रमुख सिंधु घाटी स्थल, खोजकर्ता, वर्ष एवं नदी :

स्थल	नदी	खोजकर्ता एवं वर्ष
कालीबंगन	घग्घर	अमलानंद घोष (1951) एवं बी. के. थापर (1961)
रोपड़	सतलज	यज्ञ दत्त शर्मा (1956)
बनमाली	रंगोई	आर. एस. विष्ट (1974)
धौलावीरा	लूनी	जे.पी. जोशी (1967–68)
रंगपुर	मादर	रंगनाथ राव (1954)
कोटदीजी	सिंधु	फजल अहमद (1953)
चन्हूदड़ों	सिंधु	एन. जी. मजूमदार (1931)